5. 'मेघदूतम्' के अनुसार मेघ मार्ग के विषय का वर्णन कीजिए।

6. मुद्राराक्षस की नाटकीय विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

7. प्रज्ञा विक्रमभक्तयः समुदिता येषां गुणा भूतये।

   ते भूत्या नृपतेः कलत्रमितरे सम्पत्सु आपत्सु च॥

   मुद्राराक्षसम् नाटकानुसार उक्त सूक्ति की व्याख्या कीजिए।

8. अधोलिखित में से किन्हीं **दो** सूक्तियों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए :

   (अ) अत्यादरः शङ्कनीयः।

   (ब) अनुभयतां चिरं विचित्रो राजप्रसादः।

   (स) कार्याणां गतयोविधेरपि न यान्त्याज्ञाकरत्वं चिरात्

   (द) स्वपतोऽपि ममेव यस्य तन्त्रे गुरवो जाग्रति कार्य जागरूकाः।

9. अधोलिखित में से किन्हीं **दो** सूक्तियों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए :

   (अ) रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।

   (ब) स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषुः।

   (स) मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः।

   (द) आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्।

MASA–02

June – Examination 2022

M.A. (Previous) Examination

SANSKRIT

(ललित साहित्य एवं नाटक)

Paper : MASA-02

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **80***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **4×4=16**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक वाक्य, एक शब्द या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का है।

1. (i) वीभत्स रस के स्थायी भाव का नाम लिखिए।

   (ii) गर्भांक संधि किसे कहते हैं ?

(iii) 'अवस्थापञ्चकम्' के नाम लिखिए।

(iv) 'मुद्राराक्षसम्' नाटक के नायक का क्या नाम है ?

(v) दृश्य काव्य को रूपक क्यों कहा जाता है ?

(vi) 'मन्दाक्रान्ता' छन्द का लक्षण लिखिए।

(vii) 'मृच्छकटिकम्' के तृतीय अंक का क्या नाम है ?

(viii) 'मेघदूतम्' काव्य के तीन पात्रों के नाम लिखिए।

खण्ड—ब **4×16=64**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 16 अंक का है।

2. निम्नलिखित में से किसी एक श्लोक की संदर्भ, प्रसंग एवं अन्वय सहित हिन्दी भाषा में अनुवाद कीजिए :

(अ) जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं
याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा॥

अथवा

(ब) मन्दाकिन्याः सलिलशिशिरैः सेव्यमाना रुणद्धि-
र्मन्दाराणामनुतटरुहां छायया वारितोष्णाः।
अन्वेष्टव्यैः कनकसिकतामुष्टि निक्षेपगूढैः
संक्रीडन्ते मणिभिरमरप्रार्थिता यत्र कन्याः॥

3. निम्नलिखित में से एक श्लोक की सप्रसंग व्याख्या संस्कृत भाषा में कीजिए :

(अ) एता हसन्ति च रुदन्ति च वित्तहेतो
र्विश्वासयन्ति पुरुषं न तु विश्वसन्ति॥
तस्मान्नरेण कुलशीलसमन्वितेन
वेश्याः श्मशान-सुमना इव वर्जनीयाः॥

अथवा

(ब) प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमगुणा न परित्यजन्ति॥

4. 'कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते' पंक्ति की समीक्षा कीजिए।